Hindustan
New Delhi, 3 May 2009

स्मृति होगी सुरक्षित

अपने साहित्यकारों की यादों को संजोने के प्रति हमारा समाज शायद उतना सजग नहीं है जितना पाश्चात्य समाज। बांग्ला और मलयालम भाषी समाज फिर भी इस मामले में अपेक्षाकृत सजग है (रवींद्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय आदि साहित्यकारों की स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए बंगाल में संग्रहालय मौजूद हैं। केरल में भी तकषि शिवशंकर पिल्लई की मृत्यु के बाद प्रदेश सरकार ने उनके आवास को संग्रहालय घोषित किया था।) लेकिन हिन्दी क्षेत्र में इलाहाबाद संग्रहालय संभवतः एकमात्र ऐसा स्थान है जहां सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और उपेंद्रनाथ अश्क की कुछ चीजें सुरक्षित-प्रदर्शित की गई हैं। इसके बावजूद अभी देश में ऐसा कोई व्यवस्थित संग्रहालय नहीं है जहां लोग अपने प्रतिनिधि साहित्यकारों से जुड़ी यादगार चीजों को देख सकें। इस अभाव को महसूस करते हुए दिल्ली के जाने-माने प्रकाशक वाणी प्रकाशन ने निजी स्तर पर इस दिशा में एक पहल की है। उसने साहित्यकारों की स्मृतियों को सुरक्षित करने के लिए एक छोटा-सा संग्रहालय बनाने का निर्णय किया है। इसी क्रम में उसने मशहूर उर्दू शायर फिराक गोरखपुरी की टोपी, छड़ी, घड़ी, शेरवानी तथा उनकी पांडुलिपियों को दिल्ली में प्रदर्शित करने का फैसला किया है।

वाणी प्रकाशन के प्रबंध निदेशक अरुण माहेश्वरी के अनुसार फिराक साहब के मानस पुत्र रमेश द्विवेदी ने उन्हें फिराक साहब की टोपी, घड़ी, शेरवानी आदि सौंप दी है जिसे वह दरियागंज स्थित अपने कार्यालय में स्थायी रूप से प्रदर्शित करने जा रहे हैं। उनकी योजना में अन्य लेखकों की स्मृतियों को सुरक्षित करना भी शामिल है। इस सिलसिले में उन्होंने उर्दू साहित्यकार गुलजार की कलम और बांग्ला लेखिका महाश्वेता देवी की चीजें भी रखने का निर्णय लिया है।

लिखते पढ़ते

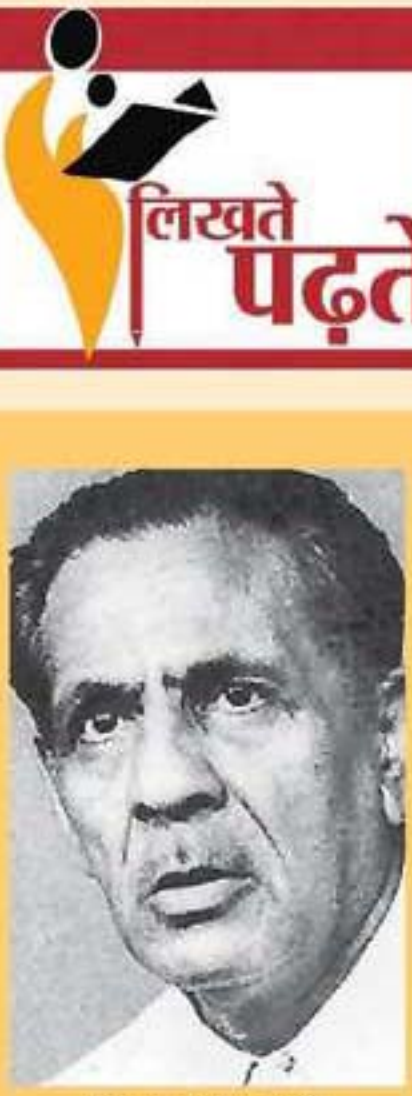

'फिराक' गोरखपुरी

द इंडियंस... का मुखपृष्ठ

एनएसडी में अशोक अग्रवाल की विशेष प्रस्तुति

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एनएसडी के मासिक कार्यक्रम 'श्रुति' में श्रोता सुपरिचित कथाकार और यात्रा प्रसंगों के रचनाकार अशोक अग्रवाल के यात्रा अनुभव से रू-ब-रू हुए। एनएसडी की त्रैमासिक पत्रिका 'रंग प्रसंग' की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में श्री अग्रवाल ने रुद्र प्रयाग की यात्रा के अनुभव से रचना पाठ प्रारम्भ किया। अमर कंटक के पास रहने वाले एक चरवाहे के माध्यम से उन्होंने जीवन की तमाम जटिलताओं की परतें खोली। उसके बाद जैसलमेर के गांवों की कहानी का मार्मिक वर्णन किया। वहां इंसानों और पशुओं के जीवन, पशुओं के जीवन के लिए घास और पानी के एक साथ उपलब्ध नहीं होने के कारण मृत्यु की ओर बढ़ते पशुओं की दास्तान रेत में जीवन की कहानी कहती रही जिस भाव को श्रोताओं के बीच साफ उतरते देखा गया। अंत में एनएसडी रंगमंडल प्रमुख सुरेश शर्मा द्वारा श्री अग्रवाल की कहानियों पर तैयार एक नाट्य प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन एनएसडी के पूर्व निदेशक देवेन्द्र राज अंकुर ने किया।

'इंडिया' पर कॉफी टेबल बुक

भारत, भारत के विविध रंग और भारतीयों की स्पिरिट किसी के भी मन को प्रभावित किए बगैर नहीं रह पाती। इन्हीं खूबियों ने कारपोरेट लॉयर सुमन्त बत्रा के भी मन को गहरे प्रभावित किया और उन्होंने तैयार कर डाली एक कॉफी टेबल बुक। पुस्तक का नाम है- द इंडियन्स : इनट्रेस्टिंग एस्पेक्ट्स, एक्स्ट्राऑर्डिनरी फेसेट्स। इक्कीस चैप्टर की इस पुस्तक का विमोचन पिछले दिनों भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष एवं सांसद डॉ. कर्ण सिंह के हाथों नई दिल्ली के ओबेराय होटल में संपन्न हुआ।

साठ श्रेष्ठ पांडुलिपियों पर साठ लाख के पुरस्कार

आज हिन्दी में भारतभूषण अग्रवाल और अंकुर मिश्र नामित पुरस्कारों से लेकर ज्ञानपीठ और सरस्वती सम्मान तक साहित्यिक सम्मानों और पुरस्कारों की कमी नहीं है। इस कड़ी में हाल में एक और पुरस्कार जुड़ गया है जो पहले के पुरस्कारों से अपनी प्रकृति में कुछ अलग और महत्वाकांक्षी है। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के प्रतिष्ठित हिन्दी प्रकाशक राजकमल प्रकाशन ने अपनी साठ सालों की प्रकाशन यात्रा पूरी करने के उपलक्ष्य में एक-एक लाख रुपए के साठ पुरस्कारों की घोषणा की है। ये पुरस्कार साठ श्रेष्ठ पांडुलिपियों पर दिए जाएंगे। पुरस्कारों के लिए कोई आयु सीमा या अंतिम तिथि तय नहीं की गई है। प्रविष्टि के लिए कोई लेखक कभी भी अपनी नई पांडुलिपि भेज सकता है। इस पुरस्कार योजना के लिए प्रकाशन ने स्वयं द्वारा प्रकाशित साठ प्रतिनिधि पुस्तकों का चयन किया है। इन पुस्तकों और लेखकों के नाम पर उनके विचारों और चिंतन को विस्तार देने वाली साठ श्रेष्ठ पांडुलिपियों को एक-एक लाख रुपए की राशि से पुरस्कृत किया जाएगा। पुरस्कृत पांडुलिपि को राजकमल प्रकाशित भी करेगा।

प्रस्तुति : **सत्य सिंधु/धर्मेंद्र सुशांत**